बेहद के साथी सुनो

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।।

उपाय किए अनेको, पर काहूं ना लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।।

ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर।
पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर।।

सो निध जाहेर इत हुई, धंन धंन संसार।
धंन धंन खंड भरथ का, धंन धंन नर नार।।

ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं।
कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं।।